जल

राजेन्द्र बहादुर सिंह "राजन"
रायबरेली (उत्तर प्रदेश)

बूँद आत्मा है और सिन्धु परमात्मा। सिन्धु की गहराई अथाह है और सीमा अनन्त। आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनों स्थानों पर जल ही जल है। पेड़ - पौधों के पत्ती-जड़ और तने में जल है। जीव-जन्तु, पशु-पक्षी और मानव काया में जल विद्यमान है। कहीं दृश्य तो कहीं अदृश्य किन्तु हर जगह जल है।

नदियों का जल समुद्र में जाकर विलीन हो जाता है। अपना अस्तित्व -बोध समाप्त करने के पश्चात नदी स्वयं समुद्र की संज्ञा प्राप्त कर लेती है। किन्तु विश्व की समस्त नदियाँ समुद्र में जाकर नहीं मिल पाती। कुछ नदियाँ अपनी गति से प्रवाहित होती हुई किसी दूसरी नदी में मिलती हैं। कभी-कभी किसी स्थान पर कई नदियों का जल एक नदी में मिल जाता है। नदियों का कुछ जल गड्ढ़ों, तालाबों और नहरों में चला जाता है। वर्षा का जल भी तो समुद्र और नदियों का ही जल होता है।

किसी-किसी स्थान का जल अपेक्षाकृत अधिक पवित्र माना जाता है। ऐसे स्थानों को तीर्थधाम की संज्ञा दी जाती है। शेष स्थानों का जल साधारण माना जाता है, जिसका उपयोग नहाने-धोने, देवताओं पर चढ़ाने और पीने के लिए किया जाता है। कहीं-कहीं का जल मात्र शौच-क्रिया के लिए या फिर खेतों की सिंचाई आदि के लिए उपयोग में लाया जाता है। किसी -किसी स्थान का जल इतना दूषित होता है कि वह किसी कार्य में नहीं आता, उसमें गंदे कीड़े इत्यादि रहते हैं। विभिन्न प्रकार के जल की उपयोगिता में अन्तर अवश्य है किन्तु मूल रूप से वह सिन्धु का ही अंश है।

गंगा-यमुना और सरयू का जल अपेक्षाकृत अधिक पवित्र माना जाता है और इन तीनों में गंगा को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। गंगा का हिमालय और महासिन्धु से सीधा सम्बन्ध है। शेष कुछ नदियां गंगा में ही मिलकर अपना अस्तित्व बोध समाप्त कर देती हैं।

नदियों का जल यद्यपि सिन्धु में जाकर मिलता है तथापि उसके जल का स्वाद

नदियों के जल से सर्वदा पृथक होता है। नदियों का जल जीवन के सभी कार्यो के लिए उपयोग में लाया जाता है। यहाँ तक कि जीवन से मृत्यु तक का सम्बन्ध नदी से है। नदी के किनारे ही बच्चों के प्रारम्भिक संस्कार (मुण्डन आदि) होते हैं। नश्वर काया को या तो नदी के जल में प्रवाहित कर दिया जाता है या फिर अस्थियों को जलाकर उसकी राख को प्रवाहित किया जाता है।

वैसे तो बहुत सी नदियां हैं और सागर हैं, किन्तु प्रमुख तीन नदियाँ गंगा, यमुना और सरयू हें तथा तीन महासागर हिन्द, प्रशान्त और अटलांटिक हैं। यह तीनों महासागर ब्रम्हा, विष्णु और महेश के सदृश हैं तथा तीनों नदियां दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी के सदृश हैं। सभी सागर देवताओं की कोटि के हैं और शेष सभी नदियां देवियाँ हैं।

जिस प्रकार विश्व का कल्याण करने वाली सभी नदियां और सागर अर्चना के योग्य हें उसी प्रकार सभी देवी-देवता वन्दनीय हैं। किसी भी देवी-देवता पर सन्देह करना सर्वथा अनुचित है।

जिस प्रकार नदियां और सागर महासिन्धु के ही स्वरूप हैं और विश्व के लिए कल्याणकारी हैं। उसी प्रकार देवी-देवता भी परमपिता परमेश्वर के ही सजीव रूप हैं। वैसे सारा संसार परमात्मा का स्वरूप होने के कारण वन्दनीय है।

जिसके समीप जो नदी होती है वह उसी की पूजा करता करता है, उसी में स्नान करता है। जिस प्रकार बीमार होने पर रोगी निकट के ही डाक्टर के पास पहले जाता है, भली ही वह कम योग्य हो। उसी प्रकार मनुष्य अपने श्रद्धा और विश्वास के सन्निकट देवी-देवता की अर्चना करते हैं जो सर्वथा उचित एवं न्यायपूर्ण है।

जिस प्रकार समुद्र का जल नदियों के जल से अभिन्न होते हुए भी सर्वथा भिन्न है। नदी में ज्वार-भाटा की क्रियायें नहीं होती। नदी का जल खारा नहीं होता और नदी के जल में स्थिरता नहीं होती। समुद्र का जल जीवनपयोगी होते हुए भी, जीवनपयोगी नहीं होता। वह कल्याणकारी होते हुए भी प्रत्यक्ष रूप से किसी का कल्याण नहीं करता। अप्रत्यक्ष रूप से नदी, कूप और तालाब के रूप में वह विश्व का कल्याण करता है। उसी प्रकार (सच्चिदानंद)

परमपिता परमात्मा भी सत्य-असत्य, पाप-पुण्य, हानि-लाभ और जीवन-मरण से परे है। वह स्वयं किसी कार्य में कभी निमित्त नहीं बनता। वह कार्य, कारण और कर्ता तीनों होते हुए भी तीनों से पृथक रहता है।

चूँकि ईश्वर परमसत्य है और जगत के कण-कण में विद्यमान है। ईश्वरमय होने के कारण जगत सत्य है, मिथ्या नहीं है। जगत ईश्वर का ऐश्वर्य है। ईश्वर से अलग हट कर देखने पर ही जगत मिथ्या है।

ईश्वर बहुरूपिया है। जिस प्रकार समय-समय पर बहुरूपिये विविध रूप धारण कर लेते हैं किन्तु मूल रूप में वह वही होते हैं, उसी प्रकार ईश्वर भी अपनी इच्छा अनुसार राम, कृष्ण, वराह, कश्यप, मत्स्य कोई भी रूप धारण कर सकता है। वह निराकार भी रह सकता है और आकार भी धारण कर सकता है। एक साथ एक समय में वह अनन्ताकार हो सकता है। वह आकार रूप में महासिन्धु है तो निराकार रूप में भाव-सिन्धु है। आकार रूप में उसकी शक्ति पृथ्वी, आकाश और पाताल में गंगा नदी के रूप में बहती है तो निराकार रूप में वही शक्ति हृदय-गंगा के रूप में विद्यमान है।

ईश्वर धर्म-जाति-भाषा-सम्प्रदाय सबसे परे है। वह तो महासिन्धु ही है, उसके नीर को भले ही हिन्दू जल, मुसलमान आब और इसाई वाटर कहें। सिक्ख अपनी भाषा में और कुछ कहें। जल, जल है। अपने-अपने धर्म के अनुसार उसका उपयोग कैसे भी किया जाये।

कुएं का स्त्रोत सीधे समुद्र से संबंधित होता है। कुएं का जल सर्वसुलभ भी होता है और सामान्य-जीवन में सबसे अधिक उपयोगी भी होता है। इस जल के सदृश ही जो व्यक्ति प्राणिमात्र के लिए उपयोगी हो जाते हैं, वे ही संत और महात्मा हैं। ऐसे सत्पुरूषों की वन्दना ईश्वर की ही वन्दना होती है।

जिस प्रकार किसी-किसी स्थान का जल इतना प्रदूषित होता है कि वह किसी के उपयोग में नहीं आता। जैसे गंदा नाली का जल जो त्याज्य होता है उसी प्रकार प्रदूषित आचरण वाले व्यक्ति भी समाज के किसी काम के नहीं होते।

आज तो सर्वत्र प्रदूषण ही प्रदूषण है। सभी नदियों का जल प्रदूषित हो गया है। गंगा भी मैली हो गयी है। हो भी क्यों न ? जब मन की ही गंगा मैली है तो धरती पर बहने वाली गंगा मैली क्यों न हो ? दोष गंगा का नहीं, दोष हमारा-आपका है।

जिस प्रकार गंदी नाली में केवल गंदे कीड़े ही रहते हैं, उसी प्रकार प्रदूषित मन वाला हर व्यक्ति राक्षस अथवा निशाचर है। तभी तो आज आसुरी-प्रवृत्ति के लोगों का बाहुल्य है। हमारा नैतिक कर्त्तव्य है कि हम स्वयं अपने-अपने अन्तःकरण के प्रदूषण को समाप्त करें, तभी हम बाहर के प्रदूषण को समाप्त करने में सक्षम होंगे और स्वयं को मनुष्य कहलाने के अधिकारी होंगे। जल ही जीवन है। हमारा जीवन विशुद्ध जल की तरह पवित्र, पारदर्शी और संवेदनशील होना चाहिए।

* * *